ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 16 कुल पृष्ठ-8 1 से 7 अक्टूबर, 2020 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 आ. कृ.-08

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का आर्यजनों से आह्वान

2024 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशताब्दी मनाने की तैयारी प्रारम्भ कर दें

विगत 200 वर्षों में महर्षि के स्वप्न को साकार करने में हम कितने सफल हुए, मिलकर चिन्तन करें?

आगामी चार वर्ष का ठोस कार्यक्रम बनाने के लिए अपने अमूल्य सुझाव भेजें

महान समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा 1875 में स्थापित विश्वव्यापी आध्यात्मिक आन्दोलन आर्य समाज, समर्पित भावना से वेदाधारित जीवन मूल्यों, समानता, सत्य, प्रेम, न्याय, सहनशीलता आदि की पुनर्स्थापना का संकल्प लेकर आदर्श समाज की स्थापना हेतु की गई थी। इन संकल्पों को पूर्ण करने में आर्य समाज के नेताओं, संन्यासियों, विद्वानों तथा कार्यकर्ताओं ने कठोर परिश्रम किया और कुछ सफलता भी पाई। लेकिन दुर्भाग्य से यह सभी महान आत्माएँ आज हमारे बीच नहीं हैं। आर्य समाज का कार्य द्रुत गति से चलता रहे, निष्ठा, लगन तथा परिश्रम से हम महर्षि के स्वप्न को पूरा कर पायें यह बड़ी जिम्मेदारी आज हम सबके ऊपर आ गई है। हम सबको मिलकर संगठित होकर आर्य समाज को क्रांति पथ पर अग्रसर करना होगा। आर्य समाज के पास उच्चकोटि का नेतृत्व है। उच्च कोटि के विद्वान् हैं, प्रभावी संन्यस्त मण्डल है और उच्च कोटि का साहित्य है। अतः हमें योजनाबद्ध ढंग से चलना है और सफलता प्राप्त करनी है। आजकल कोरोना संक्रमणकाल चल रहा है। इस संक्रमण ने सामाजिक तथा धार्मिक संगठनों को बहुत क्षति पहुंचाई है। आर्य समाज भी इससे अछूता नहीं रहा। लेकिन हमें सुरक्षा का ध्यान रखते हुए अपने कार्यक्रम जारी रखने होंगे।

आज हमारा भारतीय समाज जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, पाखण्ड, नशाखोरी, शोषण कन्या भ्रूण हत्या और नारी उत्पीड़न तथा गोहत्या में आकंठ डूबा हुआ है महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 19वीं शताब्दी में ही वैदिक अध्यात्मवाद के रूप में इन सब समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया था। अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भुलाकर कोई भी समाज या राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। आज हमारे राजनेता बड़े उद्योगपति, खिलाड़ी तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति गुरुडम, पाखण्ड, जातिपात आदि सामाजिक बुराईयों को बढ़ावा देने में लगे हुए हैं। सारा इलेक्ट्रानिक एवं सोशल मीडिया भी इन सब कार्यों को बढ़ावा दे रहा है। स्थिति बहुत चिन्ताजनक है। इन सब चुनौतियों का सामना आर्य समाज को करना है। कोरोना संकट के कारण आर्यों में आई शिथिलता को दूर करना है, आर्य समाज चाहरदिवारी से बाहर आकर राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर उठे, आन्दोलित हो और राष्ट्रीय जनमानस में दृढ़ता से स्थापित हो ऐसा प्रयास करना आज सबसे बड़ी आवश्यकता है। जो रूक गया, जो ठहर गया वह आर्य समाज नहीं हो सकता। हमें भावी पथ को प्रशस्त करना है। महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज ही देश को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाला तथा वर्तमान विघटन की परिस्थितियों से सफलता पूर्वक किनारे लगाने की क्षमता रखता है। अतः हमारा सबका यह पुनीत कर्त्तव्य है कि आर्य समाज के मन्तव्यों के प्रचार–प्रसार में सब एकमत हों तथा कार्य करने में निष्ठा पूर्वक लग जायें। ताकि जो शिथिलता दिखाई पड़ रही है, वह दूर हो। यही सच्ची सेवा है और यही ऋषि के ऋण से उऋण होने का एक मात्र रास्ता है।

2024 में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म की दूसरी शताब्दी आ रही है। यह एक ऐसा सुअवसर है जिससे प्रेरणा प्राप्त कर हम पूर्ण उत्साह से आगे बढ़ सकते हैं। हमें यह भी चिन्तन–मनन करना होगा कि हमने विगत 200 वर्षों में क्या खोया और क्या पाया और आगे हमें क्या करना है। हम सबको निष्पक्ष रूप से यह विचार करना होगा कि आर्य समाज निस्तेज क्यों हो रहा है, उसकी आवाज मन्द क्यों पड़ रही है, उसका आन्दोलनात्मक स्वरूप कहाँ खो गया, आर्य समाज अपना प्रभाव क्यों नहीं बढ़ा पा रहा है, आर्य समाज की वर्तमान दशा आज हम सबके सामने स्पष्ट है। भले ही उसे कोई जानबूझकर न स्वीकारे। संगठन स्तर पर, वैचारिक स्तर पर, आन्दोलनात्मक स्तर पर, सर्जनात्मक स्तर पर, स्थिति आज अच्छी नहीं कही जा सकती है। प्रत्येक समस्या का निदान पारस्परिक संवाद के बजाय अदालत की चौखट पर जाकर तलाशना, आर्य समाज मंदिरों को धनार्जन का साधन बनाना, वैदिक धर्म तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों के प्रचार–प्रसार में उचित ध्यान न देना, आध्यात्मिक जीवन के प्रति विमुखता, दैनिक जीवन में पंचमहायज्ञों के प्रति उदासीनता, राष्ट्रीय भूमिका के प्रति सजग, सचेत, सक्रिय न रहना, स्वाध्याय वृत्ति का विलुप्त होना, अन्धविश्वास और धार्मिक पाखण्ड जैसे गम्भीर विषयों पर मौन धारण करना, कुछ ऐसी बाते हैं जिनसे आर्य समाज का प्रभाव निरन्तर घट रहा है। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में उपस्थिति भी नगण्य होती जा रही है। यह भी अत्यन्त विचारणीय है। व्यक्तिगत जीवन में सत्य, ईमानदारी, संयम, त्याग, सेवा, परोपकार, ईश्वर विश्वास आदि जो धर्म के मूल हैं अपने अन्दर झांककर देखें कि क्या हम इन्हें ईमानदारी से अपना रहे हैं। उपर्युक्त विषयों पर आज हृदय से, ईमानदारी से चिन्तन करने की आवश्यकता है कि विगत 200 वर्षों में हम कहाँ पहुँचे हैं।

आज सबसे बड़ी आवश्यकता है आर्य समाज को जनाधार देने की और यह आवश्यकता उन मुद्दों को उठाकर ही पूरी हो सकती है जिससे समाज और देश वर्तमान में हताश और दुःखी है। आर्य समाज के आन्दोलनात्मक स्वरूप को फिर से नई ऊर्जा देने की जरूरत है। वर्तमान में ऐसे अनेकों मुद्दें हैं जिनको उठाकर हम समाज को एक नई दिशा दे सकते हैं। आर्य समाज का वह स्वर्ण युग था जब हर आर्य समाजी चाहे महिला हो या पुरुष, अपने आपमें प्रचारक होता था। बदली हुई परिस्थितियों में उतना तो नहीं लेकिन यह तो अपेक्षा की ही जा सकती है कि आर्य समाजी स्वाध्यायशील और मुखर हों। उनमें अन्य लोगों को प्रभावित करने की प्रवृत्ति का विकास हो। धराशाई होते जीवन मूल्यों को यदि बचाना है, अपनी वैदिक संस्कृति को पुनः जन–जन तक पहुँचाना है और अपने अस्तित्त्व को यदि बचाना है तो अध्यात्म को पल–पल, क्षण–क्षण अपने जीवन में जीने का हमें प्रयास करते रहना होगा। धर्म प्रचार में निरन्तरता का बना रहना अत्यन्त आवश्यक है।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि समाज में सभी सदस्यों की योग्यता, क्षमता और सूझ–बूझ एक समान नहीं हो सकती। किन्तु समाज सबका है। सबको साथ लेकर चलना है, कहीं ऐसा न हो कि कुछ व्यक्ति पूरे समाज पर प्रभुत्त्व जमा लें और दूसरों को आगे आने का अवसर ही न दें। ऐसी स्थिति में आर्य समाज का नौंवा नियम याद रखना चाहिए। ''सबको अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।'' अपने संगठनात्मक ढांचे को सुधारे बिना न हम संगठित रह सकते हैं और न शक्तिशाली और न ही प्रभावशाली संस्था का निर्माण कर सकते हैं। पार्टीबन्दी का अन्त मिल बैठकर परस्पर संवाद स्थापित करके कोई सर्वमान्य विकल्प चुनकर ही हो सकता है। आवश्यकता है परस्पर जुड़कर काम करने की। एक दूसरे के अनुभवों से लाभ उठाकर सार्थक प्रयास करने की। 2024 को एक अवसर की तरह देखते हुए हमें अपने कार्यों में तीव्रता लानी होगी। आर्य समाज की सदस्य संख्या कैसे बढ़ाई जाये, इस पर भी चिन्तन करना होगा। आज भी ऐसे लाखों लोग मिल जायेंगे जो डी.ए.वी. आदि आर्य संस्थाओं से पढ़कर निकले हैं जो आर्य समाज के सदस्य तो नहीं हैं, लेकिन आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित और उसके समर्थक हैं। हमें ऐसे व्यक्तियों को जोड़ना होगा। यह स्थिति आर्य समाज की सदस्य संख्या को आगे बढ़ाने में सहायता कर सकती है। आर्य समाज को अपनी पहचान विकसित करने में ऐसी ही अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करना होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशताब्दी 2024 तक हमें अपने अन्दर क्रांतिकारी परिवर्तन करने हैं और आर्य समाज को पुनः शक्तिशाली और प्रभावशाली बनाने के लिए गम्भीरता, गहनता और सक्रियता से इस अवसर का लाभ उठाने के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करने में सहायक बनना है। यदि हम निष्ठा, ईमानदारी, परिश्रम से अपने कर्त्तव्य का पालन करने में जुट गये तो निश्चित रूप से आर्य समाज के सर्वांगीण विकास और समग्र क्रांति का पथ प्रशस्त करने में हम सफल हो जायेंगे। ध्यान ये रखना है कि यदि हम स्वयं ही नहीं जगेंगे–स्वयं ही नहीं उठेंगे तो जमाने को कैसे जगायेंगे और कैसे उठायेंगे। मेरा आर्य समाज के विद्वत्जनों से, श्रद्धेय संन्यस्त मण्डल से, आर्य समाज के नेताओं से, कार्यकर्ताओं से विनम्र अनुरोध है कि उपर्वर्णित विचारों पर गम्भीरता से चिन्तन करें, मनन करें और उसके बाद कार्यरूप में परिणित करें और मुझे भी अपने विचारों से, सुझावों से अवगत करायें।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वामी अग्निवेश जी की संक्षिप्त जीवन यात्रा

– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

समाज के दबे कुचले अन्तिम व्यक्ति की लड़ाई लड़ने वाले, हजारों बंधुआ मजदूरों को नव जीवन देने वाले, वरिष्ठ मानवाधिकार कार्यकर्ता, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी का 11 सितम्बर, 2020 को दिल्ली के आई.एल.बी.एस. अस्पताल में निधन हो गया। स्वामी जी 81 वर्ष के थे। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मंचों पर अपनी बात बेबाकी से रखने वाले स्वामी अग्निवेश जी का जन्म 21 सितम्बर, 1939 को आन्ध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम में हुआ। उनका बचपन नाना के घर बीता जो शक्ति स्टेट के दीवान थे। उनकी पढ़ाई कलकत्ता में हुई। वहीं पर बाद में वकालत की तथा सेंट जेवियर्स कॉलेज में विजनेस मैनेजमेंट के प्रोफेसर रहे। 1966 में हरियाणा के झज्जर गुरुकुल में ब्र. इन्द्रदेव (बाद में स्वामी इन्द्रवेश बने) से विचार–विमर्श करके 7 अप्रैल, 1970 को दयानन्द मठ रोहतक में संन्यास लेकर प्रो. श्यामराव से स्वामी अग्निवेश तथा ब्र. इन्द्रदेव से स्वामी इन्द्रवेश बन गये। उसी दिन अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत भी की। उसके बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा। लगभग आधी शताब्दी उन्होंने वैदिक मान्यताओं की प्रतिस्थापना के लिए लगा दी। बंधुआ मजदूरी, नारी उत्पीड़न, पाखण्ड, नशाखोरी, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार आदि मुद्दों पर इन्होंने आजीवन संघर्ष किया। आम आदमी के हक अधिकारों के लिए जहां उन्होंने संघर्ष किया वहीं सामाजिक समरसता व साम्प्रदायिक सौहार्द की भी नई मिसाल कायम की।

स्वामी अग्निवेश जी ने अपने साहसिक कार्यों से देश–विदेश में पहचान बनाई तथा आन्दोलनों के माध्यम से कानून बनवाकर सामाजिक क्षेत्र में एक नये अध्याय का सूत्रपात किया।

हालांकि अपने सामाजिक जीवन के आन्दोलनों में जहां सरकारों की लाठियां खानी पड़ी वहीं समाज के संकीर्ण लोगों की बीमार मानसिकता का शिकार भी होना पड़ा। पाकुड़ के एक आदिवासी सम्मेलन में जाते समय संगठन व विचारधारा विशेष के लोगों ने उन पर हमला किया। उसी हमले में उनका लिवर क्षतिग्रस्त हुआ। जो बहुत प्रयास करने के बाद भी ठीक नहीं हो सका।

स्वामी अग्निवेश जी का अन्तिम संस्कार 12 सितम्बर, 2020 को अग्नि योग आश्रम, बहल्पा, गुरुग्राम में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी विजयवेश जी, प्रो. विट्ठलराव जी तथा बिरजानन्द एडवोकेट ने उनकी अर्थी को कन्धा दिया। स्वामी आर्यवेश जी ने मुखाग्नि दी। वैदिक मन्त्रों का उच्चारण गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के ब्रह्मचारियों ने किया। अन्तिम संस्कार के पश्चात् स्वामी जी के मित्र डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

21 सितम्बर, 2020 को स्वामी अग्निवेश जी के जन्मदिवस व विश्व शांति दिवस के अवसर पर देश के कोने–कोने में श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन किया गया। स्वामी जी के लिए जहां सोशल मीडिया पर महत्त्वपूर्ण सामाजिक व राजनैतिक नेताओं के सन्देश आये वहीं लिखित सन्देश भी कार्यालय में प्राप्त हुए। बहुत से महानुभाव स्वयं जन्तर, मन्तर कार्यालय श्रद्धांजलि देने पहुंचे।

भले ही आज स्वामी अग्निवेश जी हमारे बीच नहीं रहे, लेकिन उनके विचार, उनके आन्दोलन, उनके कार्य आने वाली सदियों तक समाज का मार्गदर्शन करते रहेंगे। जब तक महर्षि दयानन्द सरस्वती को वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना तथा पाखण्ड के विरोध के लिए याद किया जायेगा, अब्राहम लिंकन को दासता विरोधी आन्दोलन के लिए याद किया जायेगा, महात्मा गांधी जी को सत्य के प्रति आग्रह के लिए याद किया जायेगा, चौधरी छोटूराम जी को किसान की गुलामी से मुक्ति दिलवाने के लिए याद किया जायेगा तब तक स्वामी अग्निवेश जी को भी इन महान आत्माओं के अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए याद किया जायेगा। आज हम सबको संकल्प लेने की आवश्यकता है कि इनके अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए संगठित प्रयास किये जायें। यदि हम उनके कार्यों को आगे बढ़ा पाये तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

शेष पृष्ठ 6 पर

स्वामी अग्निवेश जी द्वारा चलाये गये सामाजिक आन्दोलन

1966 में गुरुकुल झज्जर में आगमन। 1967 में (ब्र. इन्द्रदेव मेधार्थी (स्वामी इन्द्रवेश) से मिलकर जीवन समाज में लगाने का निर्णय। 1968 में युवक क्रांति अभियान कासूत्रपात। 1968 में आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का गठन। 1968 में राजधर्म साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन प्रारम्भ किया बाद में राजधर्म दैनिक भी प्रकाशित हुआ। 1968 में कुरुक्षेत्र से दिल्ली की पदयात्रा के माध्यम से नशाबन्दी आन्दोलन का आगाज। 1969 में चण्डीगढ़ आन्दोलन के दौरान पुलिस द्वारा लाठियों से पीटा गया तथा जेल गए। 1969 में कुण्डली का बुचड़खाना तोड़ा। 7 अप्रैल, 1970 दयानन्द मठ रोहतक में संन्यास दीक्षा तथा राजनैतिक पार्टी 'आर्य सभा' का गठन। 1973 किसान आन्दोलन की शुरुआत, जेल गए व साथियों सहित भूख हड़ताल की। परिणाम स्वरूप गेंहू का भाव 76 रुपये से 105 रुपये करवाया। 1973 में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रस्तोता चुने गये। किसान आन्दोलन के दौरान अम्बाला व रोहतक की जेल में रहे। जय प्रकाश आन्दोलन में स्वामी इन्द्रवेश जी को मुख्य संयोजक बनाया गया। स्वामी अग्निवेश जी ने भी इस आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। जालन्धर में गिरफ्तार हुए तथा रोहतक एवं अम्बाला जेल में रहे। जे. पी. आन्दोलन में दोबारा गिरफ्तार व 14 महीने जेल में रहे। 1977 में जनता पार्टी से चुनाव लड़ा व पूण्डरी से विधायक बने। 1977 में शिक्षा बोर्ड हरियाणा के चेयरमैन बने। हरियाणा के मन्त्रीमण्डल में शिक्षा मंत्री बने। फरीदाबाद में मजदूरों पर गोली चलाए जाने के विरोध में शिक्षा मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। 1979 में 'बंधुआ मुक्ति मोर्चा' बनाकर मजदूरों के हकों की लड़ाई प्रारम्भ की। भारत में मजदूरों के लिए पहली बार मजबूत कानून आन्दोलन के दम पर बनवाया। केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनी तथा स्वामी अग्निवेश जी को मास एक्शन कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया जिसमें प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर, श्री मोरार जी देसाई, श्री मोहन धारिया, श्री रामकृष्ण हेगड़े, श्री सुरेन्द्र मोहन, श्री जार्ज फर्नाडीज आदि बड़े नेता सदस्य रहे। 1983 में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह का आयोजन रामलीला मैदान नई दिल्ली में स्वामी अग्निवेश जी के संयोजन में किया गया। 1984–1985 में जब पूरा पंजाब आतंकवाद की चपेट में था। सिख विरोधी दंगे हो रहे थे तब अपनी जान जोखिम में डालकर लोगों के बीच गए। 1986 में हरिद्वार कुम्भ मेले के अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई तथा वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया। 1987 में दिल्ली से देवराला तक सती प्रथा विरोधी यात्रा निकाली तथा सख्त कानून बनवाया। 1992 में पुनः नशाबन्दी आन्दोलन तेज हुआ तथा बन्चारी (होडल) से चण्डीगढ़ 21 दिन की जन चेतना यात्रा का नेतृत्व किया। गाजियाबाद से हरिद्वार जन–चेतना यात्रा का नेतृत्व किया। नाथद्वारा मंदिर में हरिजन प्रवेश का आन्दोलन चलाया जिसमें तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायण का भी समर्थन मिला। शंकराचार्य को सती प्रथा के नाम पर शास्त्रार्थ की चुनौती तथा दिल्ली से पुरा महादेव की पदयात्रा का नेतृत्व किया। हिन्दू सभा भवन दिल्ली में शराबबन्दी के लिए सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया। अध्यात्म जागरण मंच का गठन पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह, श्रीमती सोनिया गांधी, श्रीमती शीला दीक्षित आदि उपस्थि रहे। ताल कटोरा स्टेडियम में शराबबन्दी महासम्मेलन का आयोजन श्री ज्ञानी जैल सिंह जी (पूर्व राष्ट्रपति), श्री मदन लाल खुराना, श्री टी.एन. सेरान, श्रीमती मेनका गांधी, श्री साहिब सिंह वर्मा आदि ने अपने विचार रखे। दिल्ली से हिसार पदयात्रा निकाली, पांच हजार कार्यकर्ता साथ चले। गिरफ्तार हुए। गुड़गांव जेल में तीन दिन रखा गया। 2002 में रोहतक के दयानन्द मठ में बेटी बचाओ सम्मेलन किया। 2004 में आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान चुने गये। 2005 में महर्षि दयानन्द जी की जन्मस्थली टंकारा से अमृतसर तक बेटी बचाओ अभियान की शुरुआत जिसमें सभी मतों के नेता शामिल हुए। सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहते हुए जहाँ आन्दोलनों का नेतृत्व किया वहीं वेदों का प्रकाशन तथा सत्यार्थ प्रकाश की 50 हजार प्रतियाँ छपवाकर बंटवाई। 2017 में विश्व इतिहास में पहली बार विश्व वेद सम्मेलन का आयोजन जिसमें देश–विदेश के हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई, बौद्ध व बहाई विद्वानों ने वेदों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सिक्खों व राम–रहीम के बीच समझौते की मध्यस्ता की। सरकार तथा नक्शलवादी नेताओं के बीच समझौते की मध्यस्ता की। सर्वधर्म संसद का गठन करके साम्प्रदायिक सौहार्द के माहौल को ठीक रखने का प्रयास। 'वसुधैव कुटुम्बकम' का गठन करके पूरी दुनिया में मानवता की लहर पैदा करने का प्रयास। स्वामी जी ने विभिन्न आन्दोलनों के नेताओं के साथ सहयोग किया जिनमें सुश्री मेधा पाटकर, श्री शंकर गुहा नियोगी, किसान नेता चौ. महेन्द्र सिंह टिकैत, श्री शरद जोशी, अरुणा राय, श्री निखिल डे, श्री हर्षमन्दर, श्री शमशेर सिंह बिष्ट, श्री जनकराज, श्री हजारी लाल जाटोलिया, श्री माया बालेश्वर दयाल, श्री असगर अली इंजीनियर, श्री ब्रह्मदेव शर्मा, श्री बनवारी लाल शर्मा, श्री राजीव दीक्षित, श्री संदीप पाण्डेय, शबाना आजमी, श्री सुभाष भटनागर आदि के नाम उल्लेखनीय है। रोहतक की बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में नाड़ी वैद्य कायाकल्प द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आयुर्वेद सम्मेलन का उद्घाटन। नक्शलियों द्वारा पकड़े गये 5 पुलिस जवानों को छुड़वाकर सरकार को सौंपा।

रोहतक की धरती पर संघर्ष का पहला सबक लेकर जिंदगी भर जूझते रहे स्वामी अग्निवेश

हरियाणा में संघर्ष से जुड़े एक साक्षात्कार के कुछ प्रमुख अंश

1968 में एक 27 साल का युवा कपडे के थैले में कुछ जरूरत के कपडे लेकर रोहतक पहुंचा। आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित होकर उसने दयानंद मठ की संस्कृति को अपना लिया। दिन के अधिकतर समय आर्य समाज का प्रचार प्रसार और लोगों के बीच बैठकर जन समस्याओं को जानने की कोशिश में वो देखते ही देखते हिंदी के साथ–साथ हरियाणवी भी अच्छी खासी बोलने लगे। वैसे, उनकी कई भाषाओं पर अच्छी पकड़ थी।

साल भर में ही वे रोहतक ही नहीं बल्कि पूरे हरियाणा में जाना पहचाना चेहरा हो गए और फिर जल्द ही एक समय ऐसा आया कि वो विधायक ही नहीं बने बल्कि हरियाणा की सरकार में शिक्षामंत्री भी बन गए। बात हो रही है विख्यात आर्यसमाजी संन्यासी स्वामी अग्निवेश की। आज वो नहीं रहे हैं लेकिन रोहतक सहित हरियाणा का एक भी कोना ऐसा नहीं है जहां से वो परिचित नहीं रहे हों। अक्सर रोहतक से कोई उन्हें मिलने जाता तो वो हरियाणवी में जरूर पूछते– और सुणाओ कै हाल सै। उनके एक साक्षात्कार के महत्वपूर्ण अंश यहां प्रस्तुत हैं, जिसमें उन्होंने हरियाणा के अपने अनुभवों पर खुलकर चर्चा की थी।

रोहतक के बारे में :– रोहतक मुझे बेहद पसंद आया था। यहां के लोग बेहद सीधे थे लेकिन गजब के मेहनती थे। सीधी बात कहते थे चाहे सामने वाले को बुरी लगे या भली। कलकत्ता के सेंट जेवियर्स कॉलेज में एक शिक्षक के रूप में पाँच साल तक नौकरी करने के बाजवूद ऐसा कुछ था जो खालीपन का अहसास करवाता था। यह कलकत्ता और बंगाल में एक अशांत समय था, क्योंकि वहां चरमपंथी नक्सली आंदोलन जोर पकड़ रहा था।

वहां असमानता और अन्याय के खिलाफ लड़ने का एक गहरा आग्रह महसूस किया। उस समय के मुद्दे अन्य विषयों के बीच भूमि अधिकार के थे। नक्सली आंदोलन का अपना सिद्धांत था कि क्रांति बंदूक की बैरल से बढ़ती है लेकिन मैंने उसे अस्वीकार्य किया। इसी दौरान अनुभव किया कि एक विकल्प महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण हो सकता है वो है एक अहिंसक क्रांति के लिए जनता को जुटाना।

आर्य समाज आंदोलन ने जनता और गरीब किसानों को प्रेरित करने के लिए वेदों के वैचारिक समूह का उपयोग किया था। हरियाणा में जाने का मेरा इरादा इसी सोच को आगे बढ़ा था और इसी सोच के साथ आर्य समाज ने मेरी जिंदगी को बदल दिया। रोहतक के दयानंद मठ की संस्कृति में रचने बसने के बाद जब लोगों से मुलाकात की तो यह तय हो गया कि हरियाणा में कोई भी सफलता राष्ट्रीय राजनीति को भी प्रभावित कर सकती है।

जन्म और शिक्षा दीक्षा :– जन्म एक रूढ़िवादी, ब्राह्मण परिवार में हुआ था। मातृभाषा तेलुगु थी। आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम बेरहामपुर में गांव था और ये उड़ीसा की सीमा पर स्थित है। चार साल की उम्र में अपने पिता को खो दिया था और उनकी मां अग्निवेश और मेरे चार भाइयों और बहनों के साथ अपने नाना के साथ रहने चली गई, जो कि मध्य प्रदेश, जो अब छत्तीसगढ़ में एक रियासत के दीवान थे, के साथ रहने लगे। इसलिए मुझे उनके मार्गदर्शन और अधिकार के तहत लाया गया। वह एक पौराणिक भक्त इंसान थे, जो सभी देवी–देवताओं की पूजा करते थे। मुझे उनके बारे में बताया गया था और हालांकि, मेरे पास बहुत सारे सवाल थे, लेकिन मुझे उनसे पूछने की अनुमति नहीं थी। परिणामस्वरूप बालकपन में हमने महसूस किया कि वो एक धार्मिक पैकेज के हिस्से के रूप में अंधविश्वास, हठधर्मिता और अनुष्ठानों का अभ्यास कर रहे थे।

कलकता से रोहतक :– 17 वर्ष की आयु में मेट्रिक के बाद कॉलेज के लिए कलकत्ता चला गया। वहां आर्य समाज आंदोलन से परिचय हुआ और इसने नींव को हिला दिया, स्वामी अग्निवेश को एक नई सोच मिली। आर्य समाज में पाखंड के बारे में, जाति व्यवस्था के बारे में और धर्मनिरपेक्ष धर्म के कई आयामों के बारे में और अधिक सवाल पूछने के लिए हर कदम पर प्रोत्साहित किया गया। दृष्टिकोण बहुत तर्कसंगत और बहुत प्रगतिशील, बहुत समतावादी था, कुल मिलाकर एक बहुत ही आध्यात्मिक विचारधारा, जिसे गले लगाया। एक नए रूपांतर की तरह, मैं प्रचार करने की इच्छाशक्ति के साथ काफी उत्साही बन गया, जैसा कि मैंने इसे एक अच्छी विचारधारा के रूप में देखा, और समझा कि दुनिया को क्या चाहिए।

रोहतक का दयानंद मठ :– मैं नौसिखिए ब्रह्मचारी के रूप में रोहतक के दयानंद मठ में आर्य समाज आंदोलन में शामिल हो गया। पहले कदम के रूप में, मैंने अपने कपड़े, सूट छोड़ दिए और गेरूआ वस्त्र पहन लिए। मैंने खुद को आर्य समाज परंपरा में एक ब्रह्मचारी के रूप में पुष्टि की। मैंने और मेरे सहयोगियों ने दो साल की अवधि के लिए एक साथ सब कुछ किया, अध्ययन किया, नंगे पैर ही लंबी दूरी तक चलना, फर्श पर सोना, बिना नमक का खाना, नंगे न्यूनतम कपड़े के साथ रहना। मैं पहले खुद को परखना चाहता था, यह देखने के लिए कि क्या मैं अनुशासन और संघर्ष की कठोरता को प्राप्त कर सकता हूं।

हरियाणा में और क्या किया :– हमने एक यात्रा शुरू की। प्रत्येक गाँव में जब हम हरियाणा से चले तो हमें भाषण देने के लिए बुलाया गया, क्योंकि लोग हमसे सुनना चाहते थे। हमने उनसे उनकी समस्याओं के बारे में बात की और प्रतिक्रिया जबरदस्त होती। यह बहुत उत्साहजनक था। जो कहा गया उसमें वास्तव में कुछ भी नया नहीं था। वे सिर्फ हमें अपनी स्थिति के बारे में बताना चाहते थे, और हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि हालात ऐसे क्यों थे।

हमने वहां से दिल्ली में लाल किले की प्राचीर से 18 दिनों तक मार्च किया, हमेशा हरियाणा के ग्रामीण इलाकों में नंगे पांव घूमते हुए। हमारा उद्देश्य ग्रामीण जनता के साथ

बातचीत करना और समझना था। हम उन्हें करीब से जानना चाहते थे और उनके मन में आशा जगाना चाहते थे कि बदलाव संभव है। शुरुआत में हमारे पास कुछ मोटे विचार थे, लेकिन वे इतने गहरे नहीं थे। जब हम एक जगह से दूसरी जगह गए, तो ग्रामीण लोग अपनी गरीबी और अज्ञानता के साथ, बहुत संवेदनशील थे।

उन्होंने हमारा स्वागत किया, कम समय में 200 व्यक्तियों के लिए भोजन तैयार किया, और हमें सर्वश्रेष्ठ आतिथ्य प्रदान किया, भले ही हम अज्ञात युवा लोग थे। प्रत्येक दिन हम अपने रात के शिविर के लिए एक नए गांव में चले जाते। यह कारवां आगे बढा और जब हम पहुंचे तो हर कोई तैयार था, और लोग हमारा स्वागत करते हुए, इकट्ठा हो रहे थे। हम इससे रोमांचित थे, क्योंकि हमने इस प्रतिक्रिया, इस उतार–चढ़ाव की तरह कुछ भी नहीं देखा था। लोगों ने आशा के संदेश जगा और शिक्षित युवकों के इस समूह में उन्होंने आशा की किरण को देखा।

ग्रामीण महिलाओं ने विशेष रूप से हमें दिखाया कि कैसे उन्होंने विकास की समस्याओं को समझा। संभवतः प्रत्येक गांव में महिलाएं हमें बता रही थी कि सरकार द्वारा स्थापित की गई शराब की दुकान घरेलू हिंसा का सबसे बड़ा स्रोत थी और गांव के वातावरण और पारिवारिक शांति को विषाक्त कर रही है। ये शराब की दुकानें छोटी–छोटी इमारतें थीं, जैसे प्रत्येक गाँव के बाहरी हिस्से में एक झोंपड़ी, लेकिन उन्होंने इसे सभी परेशानियों के स्रोत के रूप में देखा। यह ऐसा था जैसे शराब की दुकान आने से पहले सब कुछ ठीक और शांतिपूर्ण था। उन्होंने इसे बुराई के स्रोत के रूप में इंगित किया। जैसा कि हमने मार्च किया, यह एक विशेष मुद्दा बनकर उभरा, और शराब विरोधी आंदोलन का उदय हुआ।

आपातकाल और इसके बाद राजनीति :– आपातकाल में जेल में बंद रहा और वहां गांधी जी के साहित्य का अध्ययन किया। फिर चीजें बदल गईं। 1977 से 1982 तक हरियाणा राज्य की विधान सभा का सदस्य था और मैंने शिक्षा मंत्री के रूप में संक्षिप्त सेवा की। तब भी हम हर दिन खुद का विरोध ही कर रहे थे और मैंने खुद को सिस्टम से ज्यादा परेशान पाया। राजनीतिक प्रक्रिया दर्दनाक थी। राजनेताओं का एक पूरा वर्ग था जो एक ही पार्टी, जनता पार्टी, और जय प्रकाश नारायण के आंदोलन के कुल क्रांति के थे। जितनी जल्दी वे नारायण को त्यागते थे, उतनी जल्दी ये राजनेता अपनी सीटों पर नहीं होते थे और उनकी मृत्यु के बाद उन्हें छोड़ दिया जाता था। जेपी नारायण, एक महान अहिंसक तथा करुणा प्रिय आदमी थे। गांधी की तरह एक बहुत ही दुखद मौत मर गए।

सत्ता में आपका समय कैसा था? :– हरियाणा में शिक्षा मंत्री के रूप में मेरा कार्यकाल बहुत संक्षिप्त था और जिस दिन मैंने अपनी सरकार के खिलाफ विरोध किया, मुझे इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ा। हमारी सरकार को नागरिक स्वतंत्रता बहाल करने के विशिष्ट जनादेश के साथ सत्ता में रखा गया था जो श्रीमती गांधी के अधीन ले लिया गया था।

हमें नागरिक अधिकारों को बहाल करने के लिए सत्ता में लाया गया था लेकिन हरियाणा के मुख्यमंत्री दिल्ली की सीमा के पास एक औद्योगिक टाउनशिप फरीदाबाद के उद्योगपतियों को खुश करने के लिए अपने रास्ते से हट गए। उन्होंने पूरे साल के लिए शहर में धारा 144 लागू कर दी। यह एक ऐसा कानून था जो अंग्रेजों ने पारित किया था और मुख्य रूप से इस्तेमाल किया था जब वे एक भीड़ को तितर–बितर करना चाहते थे, और यह घोषित किया कि पांच से अधिक लोग इकट्ठा न हो सकें।

उन्होंने एक–दो दिन में इसका उपयोग किया था। कानून अभी भी किताबों पर था। लेकिन हमारे अपने सज्जनों ने इसे पूरे एक साल के लिए लगाया था, इसलिए कामकाजी लोग कभी भी गेट मीटिंग नहीं कर पाएंगे, मांगें नहीं उठाएंगे या जो भी होगा। जब अंत में, मेरे अनुनय पर, श्रमिक नेताओं ने एक जुलूस निकाला, तो पुलिस ने उनका सामना किया। उन पर गोलीबारी की गई और 12 कारखाने के श्रमिकों को गोली मार दी।

मैंने कैबिनेट मीटिंग में विरोध किया और मुझे चुप रहने के लिए कहा गया, क्योंकि वह मेरा पोर्टफोलियो नहीं था। लेकिन गृह मंत्री ने न्यायिक जांच का आदेश देने के बजाय, एक मजिस्ट्रियल जांच का आदेश दिया, जो वास्तव में उन्हीं लोगों द्वारा किया जाएगा, जिन्होंने गोलीबारी का आदेश दिया था। मैं एक चश्मदीद था। चंडीगढ़, हरियाणा की राजधानी से, मैं दिल्ली गया, एक प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई और अपनी ही सरकार के खिलाफ न्यायिक जाँच का आह्वान किया। इस अनसुना किया गया और मेरी पार्टी में हर कोई बहुत परेशान था।

लेकिन मुझे पता था कि मैं सही काम कर रहा था और अपने विवेक का पालन कर रहा था। हालांकि, यह स्पष्ट था कि मैं मंत्री के रूप में नहीं रह सकता और इस्तीफा देना पड़ा। फिर, उन्होंने मेरा त्याग पत्र प्राप्त किया और घबरा गए और मुझसे एक–लाइन में बयान जारी करने के लिए कहा गया, जिसमें बस यह कहा जाना था कि मेरे जिम्मेदार बयान सही नहीं थे। यह एक सामान्य तरीका था कि राजनेता चीजों से दूर हो जाए। लेकिन मैंने कहा कि मेरा हर शब्द सही था और इसलिए मेरे पास इस्तीफा देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। तीन महीने और आठ दिनों के भीतर मैंने अपना मंत्री पद छोड़ दिया।

मैंने गांधी के महान और आकर्षक विचार के साथ पूर्णरूप से अन्याय के विरुद्ध जाने का फैसला किया जिसने मुझे अपनी जेल अवधि के दौरान प्रेरित किया था। मुझे विश्वास था कि मैं समाज के अन्तिम व्यक्ति के अधिकारों की लड़ाई पूरी ताकत के साथ लडूंगा और इसे ही विकास का आधार बनाना चाहिए। इसका मतलब है कि विकास नीचे से ऊपर की ओर शुरू होना चाहिए, ऊपर से नहीं। इसलिए तब से मैं बंधुआ मजदूरी के मुद्दे पर, दिल्ली और उसके आसपास आधुनिक समय की गुलामी के शिकार लोगों को बचाने तथा उन्हें न्याय दिलाने के लिए कटिबद्ध हो गया।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वामी अग्निवेश जी ने मचाई धूम

स्मृति शेष स्वामी अग्निवेश जी के प्रति व्यक्त किये गये देश–विदेश के गणमान्य महानुभावों के उद्गार

श्री वैंकया नायडू

उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू ने बंधुआ मजदूरी को खत्म करने के लिए स्वामी अग्निवेश जी द्वारा किए गए प्रयासों को याद किया। उपराष्ट्रपति सचिवालय ने नायडू के हवाले से कहा, ''सामाजिक कार्यकर्ता और आर्य समाज के नेता स्वामी अग्निवेश के निधन के बारे में जानकर दुःख हुआ। उन्होंने बंधुआ मजदूरी के खिलाफ आजीवन संघर्ष किया। उनकी आत्मा को शांति मिले।''

– एम. वेंकैया नायडू, महामहिम उपराष्ट्रपति

डॉ. मनमोहन सिंह

अग्रणी सामाजिक कार्यकर्ता और सुधारक, स्वामी अग्निवेश ने बंधुआ मजदूरों के लिए काम करते हुए और देश में अंतर–धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देते हुए सार्वजनिक जीवन में बहुत बड़ा योगदान दिया।

स्वामी अग्निवेश जी के निधन के साथ राष्ट्र ने 'बंधुआ मजदूरों की मुक्ति का एक योद्धा' खो दिया है।

– डॉ. मनमोहन सिंह, पूर्व प्रधानमंत्री भारत

श्रीमती सोनिया गांधी

सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश के निधन पर दुख जताते हुए कहा कि उन्होंने जीवन भर वंचितों एवं शोषितों के अधिकारों के लिए आवाज उठाई। उन्होंने एक बयान में कहा, ''स्वामी अग्निवेश ने जीवन भर पूरी प्रतिबद्धता और संकल्प के साथ समाज के वंचित तबकों के लिए काम किया। शोषितों, पीड़ितों और गरीबों के अधिकारों के लिए निडरता से आवाज उठाई तथा इसके लिए अक्सर निजी तौर पर जोखिम उठाया।''

– श्रीमती सोनिया गाँधी, अध्यक्षा, कांग्रेस पार्टी

श्री हरदीप सिंह पुरी

'महिला अधिकारों के लिए लड़ने वाले सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश के निधन के बारे में सुनकर शोकग्रस्त हूं। उनके प्रशंसकों और अनुयायियों के प्रति मेरी संवेदना है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

– हरदीप सिंह पुरी, नागरिक उड्डयन मंत्री, भारत सरकार

श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा

स्वामी अग्निवेश संघर्षों के लिए याद किये जायेंगे। समाज मे उनके द्वारा चलाये गए आंदोलनों को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने के लिए कोई विश्व स्तरीय संस्थान बनना चाहिए। इसके लिए मेरा जो सहयोग होगा मैं करूँगा।

– चौ.भूपेंद्र सिंह हुड्डा, पूर्व मुख्यमंत्री, हरियाणा

श्री अशोक गहलोत

आर्य समाजी नेता और सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश जी के निधन पर मेरी हार्दिक संवेदना। मानवाधिकारों को बनाए रखने और बंधुआ मजदूरी के खिलाफ उनका काम हमेशा याद रखा जाएगा। भगवान समर्थकों को इस दुख को सहने की शक्ति दे। स्वामी जी की आत्मा को शांति मिले।

– अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

श्री अमरेन्द्र सिंह

सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश जी के निधन के बारे में सुनकर दुख हुआ। उन्हें एक उदार तर्कसंगत विचारक के रूप में याद किया जाएगा जो उदारवादी मूल्यों और धार्मिक अमीरी के लिए खड़े थे। उनके परिवार और अनुयायियों के प्रति मेरी गहरी संवेदना। उनको शांति मिले!

– कै. अमरेंद्र सिंह, मुख्यमंत्री, पंजाब

श्री भूपेश बघेल

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने ट्वीट करके स्वामी अग्निवेश को श्रदांजलि दी और कहा ''छत्तीसगढ़ की माटी' से जुड़े और आध्यात्मिक चेतना के साथ साथ भारत में बंधुआ मजदूरों के हितों के लिए संघर्ष करने वाले स्वामी अग्निवेश जी के निधन का समाचार दुःखद है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।'

– भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

सुश्री ममता बनर्जी

"सामाजिक मुद्दों पर लड़ने के लिए कोलकाता में प्रोफेसर के रुप में अपना कैरियर छोड़ने वाले स्वामी अग्निवेश के निधन पर दुखी हूं। उनके दोस्तों और अनुयायियों के प्रति मेरी गहरी संवेदना है।"

– ममता बनर्जी, मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल

श्री नीतिश कुमार

सामाजिक मुद्दों पर खुलकर अपनी बात कहने, महिलाओं की मुक्ति जैसे कई सामाजिक आंदोलन चलाने के लिए स्वामी जी को याद किया जाएगा। आज देश ने सामाजिक व राजनीतिक चिंतक खो दिया।

– नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री, बिहार

श्री श्री रवि शंकर

स्वामी अग्निवेश जी से मेरा संबंध 40 वर्ष पुराना था। आर्य समाज के नेता स्वामी अग्निवेश वेदों के आधार पर आध्यत्मिक जीवन जीते थे। गरीब व मजबूर के लिए यदि उनको अकेले भी लड़ना पड़ा तो वो लड़े। जैसे उनका नाम था अग्निवेश, वो हमेशा बुराइयों को जलाने में लगे रहते थे। वो कई बार हमारे सैंटर में साधना के लिए भी पहुंचे थे। स्वामी जी को हमारी विनम्र श्रद्धांजलि।

– श्री श्री रविशंकर, आर्ट ऑफ लीविंग

डॉ. शिव सरीन

उनकी अनोखी हंसी, अपने अंदर समा लेने की शक्ति ने मुझे बहुत प्रभावित किया। स्वामी जी से मेरा संबंध दो दशकों का है। वो एक योद्धा थे। अंतिम दम तक वो लड़े। उनकी सबसे महत्वपूर्ण बात थी उनको कितनी भी पीड़ा हो लेकिन वो हंसते रहते थे। ये एक योगी की विशेषता होती है। हमारी ओर से विन्रम श्रद्धांजलि

– डॉ. शिव सरीन, प्रमुख आई.एल.बी.एस. अस्पताल, दिल्ली

श्रीमती अरुणा राय

स्वामी जी का इस समय हमारे बीच मे से जाना समाज व देश व हमारे जैसे कार्यकर्ताओ के लिए कष्टदायक है। जब लोग धर्म को भुनाने की कोशिश कर रहे हैं, उस समय उनकी ज्यादा जरूरत थी। उन्होंने न्याय, समानता व संविधान के लिए संघर्ष किया। आज उनकी जगह लेने वाला कोई दिखाई नही देता। हमारी ओर से श्रद्धांजलि

– अरुणा रॉय, सामाजिक कार्यकर्ता

पृष्ठ 2 का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वामी अग्निवेश जी की उपलब्धियाँ

यू.एन.ओ. के समकालीन दासता विरोधी ट्रस्ट के 9 वर्ष तक चेयरमैन रहे। विश्व विख्यात अवार्ड, निवानोपीस फाऊण्डेशन, जापान के सदस्य रहे। आस्ट्रिया में स्थापित कायसीड के 9 में से एक डायरेक्टर रहे। न्यूयॉर्क में लगभग 400 पादरियों के बीच यज्ञ करके उसकी व्याख्या की। जॉन पोप पाल द्वितीय के समक्ष वेटिकन सिटी में जाना तथा महिलाओं के अधिकारों एवं उनकी भागीदारी पर प्रश्न उठाया। इसाईयों के सबसे बड़े पोप को धर्मान्तरण के विरुद्ध पत्र लिखना। सर्वधर्म सम्मेलन में प्राचीन सनातन धर्म की व्याख्या करना। सर्वधर्म सम्मेलन में मांसाहार पर सवाल उठाना तथा आस्ट्रिया की गृहमंत्री द्वारा मांसाहार का त्याग करके शाकाहार को अपनाना महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। विश्व प्रसिद्ध आक्सफोर्ड व हारवर्ड विश्वविद्यालय में व्याख्यान। कनाडा की वर्ल्ड पार्लियामेंट ऑन रीलिजन की आम सभा में प्रभावशाली व्याख्यान दिया तथा वहाँ उपस्थित 10 हजार प्रतिनिधियों ने खड़े होकर स्वामी अग्निवेश जी का सम्मान किया। अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश के भारत आगमन पर

धर्माचार्यों के साथ बैठक में 7 मिनट विश्व शांति पर भाषण देकर वेद एवं ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका भेंट करना ऐतिहासिक कार्य है। स्पेन के मैडरीड में अरब के राजा किंग अब्दुल्ला बिन अब्दुल्ला को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करके इतिहास रचा। तिब्बतियन नेता श्री दलाई लामा को उनके आन्दोलन में चीन के खिलाफ खड़े होकर दलाई लामा का साथ दिया। दक्षिण अफ्रीका के नेता नेल्सन मण्डेला से मिलकर मजदूरों के हकों की लड़ाई लड़ने का आह्वान किया। नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री श्री बाबूराम बत्ता राय की शादी वैदिक रीति से करवाई। दुनिया के 50 से ज्यादा देशों में स्वामी अग्निवेश जी मानवाधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से गये।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा

शराब क्या है?

शराब का नाम जिसने भी रखा है बड़ा सोच समझकर रखा है!!! कैसे ???
ये देखें, ऐसे: शराब का मतलब
श - शत प्रतिशत
रा - राक्षसों जैसा
ब - बना देने वाला पेय।
और क्या कहते हैं शराब को - मदिरा
म - मरघट
दि - दिखाने वाला
रा - रास्ता
शराब को दारू भी कहते हैं
दा -दांव पर
रू-रूह
शराब को English में कहते हैं Wine
W - Wisdom (ज्ञान)
I - Income (आमदनी)
N - Nature (गुण)
E - End (समाप्त)
इसलिए ऐसे विष को हाथ ना लगाएँ

फेसबुक से साभार

जनता के हक में उम्र भर लड़ने वाला संन्यासी

देश-दुनिया में स्वामी अग्निवेश का नाम तब सामने आया जब उन्होंने बंधुआ मजदूरी को मानवता और धर्म विरुद्ध बताते हुए हरियाणा सरकार में मंत्री का पद छोड़ दिया

प्रदीप कुमार सिंह

भारतीय साधु परंपरा कितनी विस्तृत और कितनी क्रांतिकारी रही है, स्वामी अग्निवेश उसकी जीती जागती मिसाल थे। भगवा रंग सिर्फ भगवद भक्ति से ही नहीं, बल्कि जनशक्ति से कैसे और किन रूपों में जुड़ा रहा है, यह स्वामी अग्निवेश के जीवन संघर्ष को देखकर पता लग जाता है। उनसे मेरी मुलाकात छात्र जीवन से ही है, लेकिन पिछले डेढ़ दो सालों से उनके बहुत नजदीक रहने का मौका मिला। वे मुझे अपनी जीवनी लिखा रहे थे, जो अधूरी रह गई।

साधु बनने से पहले वे कलकत्ता के सेंट जेवियर्स कॉलेज में प्रफेसर, वहीं के हाई कोर्ट में सव्यसाची मुखर्जी के जूनियर एडवोकेट और विड़ला परिवार के बच्चों के ट्यूटर थे। इनमें से अगर वे किसी एक काम को भी करते रहते, तो शान-ओ-शौकत की जिंदगी गुजार सकते थे। यह सवाल उठ सकता है कि एक संपन्न तेलुगू ब्राह्मण परिवार में जन्मे और उच्च शिक्षित वेपा श्याम राव ने आर्य समाज और विभिन्न आंदोलनों में अपना जीवन क्यों होम कर दिया? सन 2018 के बाद जब मैं उनके जीवन में घटित कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को लिपिबद्ध कर रहा था, तो उनको नजदीक से जानने-समझने का मौका मिला। दरअसल उन्हें पद से नहीं, लोगों से मतलब था। देखा जाए तो वे सही मायनों में संन्यासी थे। देश-दुनिया में उनका नाम तब सामने आया जब उन्होंने बंधुआ मजदूरी को मानवता और धर्म विरुद्ध बताते हुए हरियाणा सरकार में मंत्री का पद छोड़ दिया। इसके बारे में उन्होंने मुझे बताया कि सन 1980 में फरीदाबाद में मजदूरों के मरने की लगातार खबरें आ रही थीं। छानबीन कराई तो जबरन मजदूरी कराने का मामला सामने आया।

गदर से लेकर आजादी तक के जनजागरण में संन्यासियों की प्रमुख भूमिका थी। पिछले कुछ अरसे से यह भूमिका बिसरा दी गई है, लेकिन स्वामी अग्निवेश इसी साधु परंपरा के वाहक थे। हर परंपरागत सांचे और ढांचे को वे बुद्धि, तर्क और वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसते और तर्क विरुद्ध होने पर पुरजोर विरोध करते। हर धर्म में व्याप्त पाखंड-अंधविश्वास की निंदा करने से वे कभी न चूकते। इसलिए उनको नास्तिक जैसे विशेषणों से भी नवाजा गया। एक बार उन्होंने बताया कि कैसे 1987 में राजस्थान के देवराला

रियर व्यू मिरर

सती कांड का विरोध करने पर कुछ कथित धर्मगुरु उनके पीछे पड़ गए थे।

12 सितंबर को जंतर-मंतर उनके अंतिम दर्शन के लिए विभिन्न धर्मों के धर्माचार्य आए। इससे स्पष्ट होता है कि वे किसी एक धर्म के नहीं थे। दुनिया के सारे धर्मों के अच्छे विचार के प्रति उनके मन में श्रद्धा और कुरीतियों को लेकर घृणा थी। जातीय उत्पीड़न, सांप्रदायिकता, अंधविश्वास-पाखंड पर उनके आंदोलनों के कारण विरोधियों ने उनको हिंदू विरोधी तक ठहराने की कोशिश की। लेकिन स्वामी अग्निवेश आजीवन ऐसे तथाकथित संतों-महंतों को धार्मिक पुरुष मानने से इनकार करते हुए धर्म को अध्यात्म की ओर उन्मुख करने में लगे रहे।

आजीवन शासन-सत्ता की आंख की किरकिरी रहे अग्निवेश की ढेर सारे आंदोलनकारियों से भी पटरी नहीं बैठती थी, क्योंकि उनका आंदोलन सत्ता तक पहुंचने का साधन नहीं बल्कि शासन को जनता के द्वार तक पहुंचाने का प्रयास था। इस संघर्ष की ऊर्जा का स्रोत वे धर्म को बताते थे। एक बार जब मैंने उनसे पूछा कि धर्म का मानव से क्या रिश्ता है, तो वे बोले, 'आज विश्व में प्रचलित सारे धर्मों का मूल तत्व- आध्यात्मिकता गायब हो गई है और उसकी जगह पाखंड हावी हो गया है।' अक्सर वे कहते रहते थे, 'लंबे समय से धर्म पुजारियों और धर्मगुरुओं के कब्जे में है। ये तथाकथित धर्मगुरु आज के शासक वर्ग और पूंजीपतियों से मिलकर अंधविश्वास को धर्म का मूल तत्व बता रहे हैं।'

विश्व शांति के बारे में वे कहते, 'अहिंसा के बिना विश्व शांति और पर्यावरण की रक्षा असंभव है।' उनका मानना था कि पृथ्वी पर शांति और न्याय के शासन का विचार मानव इतिहास का सबसे अनूठा विचार है और इसे 'वसुधैव कुटुंबकम' के मंत्र से ही साकार किया जा सकता है। सांप्रदायिकता और नस्लवाद को साम्राज्यवादी शक्तियों का सबसे मजबूत हथियार मानने वाले स्वामी अग्निवेश सच्चे अर्थों में विश्व मानव और धर्मनिरपेक्ष संन्यासी थे। आज के समय में उनकी बहुत जरूरत थी।

डॉ. रामप्रकाश शर्मा 'सरस' द्वारा भेजा गया शोक संदेश

वैश्विक स्तर पर आर्य समाज को प्रतिष्ठापित करने वाले आर्य मनीषियों एवं आर्य संन्यासियों में विगत कई दशकों तक एक प्रख्यात दिव्य, भव्य व्यक्तित्व के धनी स्वामी अग्निवेश जी के निधन से अतीव पीड़ा हुई है। चार दशक पुरानी स्मृतियों का चक्र घूमता रहा है।

स्वामी अग्निवेश बहु आयामी व्यक्तित्व के क्रांतिकारी संन्यासी थे। उन्होंने सदैव अपने विचार साहस के साथ रखे, वह अनेक सामाजिक आन्दोलनों के सूत्र धार थे। एक प्रसिद्ध समाजसेवी, बाल मजदूरी के विरूद्ध आवाज उठाने वाले महान योद्धा, वैदिक सिद्धांतों के सतर्क व्याख्याता, चिन्तक, नेक और मिलनसार, निडर आदर्श सन्यासी थे। बाल मजदूरी के विरुद्ध उन्होंने हर स्तर पर आवाज उठाई, जिसके परिणामस्वरूप भारत सरकार को कानून बनाने के लिए विवश होना पड़ा।

उनके निधन से आर्य सन्यासियो में एक युग का सूर्यास्त हो गया है। ऐसा सूर्य अनेक दशकों के बाद उदय होता है।

मेरा परिचय महान विद्वान आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री ने स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी शक्ति वेश जी से कराया था।

सन् 1980 में सांसद श्री रामचन्द्र विकल जी, राज्यपाल श्री जी डी तापसे के साथ तत्कालीन राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी जी के मिलने जाने वाले शिष्टमंडल में स्वामी अग्निवेश जी भी थे, मुझे भी पहली बार किसी शिष्टमंडल शामिल होने का अवसर विकल जी के सौजन्य से मिला था। तब स्वामी अग्नि वेश जी से परिचय हुआ था, तब से निरन्तर सौजन्य पूर्वक शिष्टाचार बना रहा। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति और सद् गति प्रदान करे।

– वैदिक प्रवक्ता, मो.:–9810796203

बोधगया में स्वामी अग्निवेश जी के निधन पर शोकसभा का आयोजन

सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश जी के निधन पर शनिवार को बुद्धा पदयात्री फोरम के शेखवारा स्थित कार्यालय में शोकसभा का आयोजन किया गया। जिसमें मौजूद लोगों ने स्वामी जी की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा और उन्हें श्रद्धांजलि दी। इसके बाद उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए वक्ताओं ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी महज व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व थे। उन्होंने पलामू के बंधुआ मजदूरों के मामले, नर्मदाघाटी के विस्थापितों, देश के दलित–आदिवासी समुदाय के प्रताड़ना की समस्या आदि मामलों सहित सामाजिक मुद्दों की जानकारी मिलते ही वे अविलम्ब पहुंच जाते थे। देश ने एक जुझारू नेतृत्वकर्ता को खो दिया है। शोकसभा में फोरम के संयोजक संजय आनंद, कार्यालय प्रभारी सौरभ, गांधी निधि पटना के मंत्री बिनोद रंजन, राष्ट्र सेवा दल के संगठक कारू जी, जीवन संघम के अन्टो जोसेफ, गांधी शांति प्रतिष्ठान के कृष्णा नंदन गिरि, एकता परिषद् के जगत भूषण व शत्रुघ्न दास सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।

आर्य समाज शकरपुर के वरिष्ठ सदस्य श्री ईश्वरचन्द त्यागी का देहावसान

आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली के वरिष्ठ सदस्य तथा वर्षों तक पुस्तकाध्यक्ष रहे श्री ईश्वरचन्द त्यागी का लम्बी बीमारी के बाद दिनांक 23 सितम्बर, 2020 को निधन हो गया, वे 75 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन मध्यान्ह निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। एन.डी.एम.सी. के उद्यान विभाग के निदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए श्री त्यागी जी अत्यन्त मिलनसार तथा धार्मिक व्यक्ति थे। उनका पूरा परिवार आर्य सिद्धान्तों से ओत–प्रोत है। आर्य समाज शकरपुर के प्रत्येक कार्य में वे समर्पित होकर कार्य करते थे तथा सहयोग करते

थे। वैदिक यज्ञ में उनकी गहरी आस्था थी। उन्होंने कई बार वेदों के पारायण यज्ञ विधि–विधान से कराये थे। वे सामाजिक कार्यों में अग्रणी भूमिका में रहते थे। उनके निधन से आर्य समाज शकरपुर की अपूर्णीय क्षति हुई है। आर्य समाज शकरपुर के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उनके निधन से अत्यन्त शोकाकुल हैं तथा परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शांति एवं सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

Swami Agnivesh Ji, Crusader Against Labor Abuses in India, Dies at 80

A pacifist monk, he championed social justice causes, fighting against child labor, indentured servitude and a rising tide of Hindu fundamentalism.

Swami Agnivesh, a revered longtime campaigner against child labor and indentured servitude in India, died on Sept. 11 in New Delhi. He was 80.

His death, in a hospital, was confirmed by an associate, Zayauddin Jawed, who said the cause was multiple organ failure.

A pacifist Hindu monk who renounced worldly possessions and relations at a young age, Mr. Agnivesh led a decades-long crusade against village moneylenders, landlords and brick kiln owners who forced landless, debt-ridden farmers into bonded labor, or indentured servitude.

In 1981 he founded the Bandhua Mukti Morcha, or the Bonded Labour Liberation Front, which he headed until his death. From 1994 to 2004, he was chairman of the United Nations Voluntary Trust Fund on Contemporary Forms of Slavery.

"The country is diminished by his passing," Shashi Tharoor, one of India's most influential opposition politicians, wrote on Twitter.

Mr. Agnivesh was a prominent champion of many social justice causes and a trusted mediator when conflicts arose. He fought on behalf of tribal communities that had few rights to land ownership even though they populated much of the country's forests. In the 1980s, when environmentalists objected to settling bonded laborers on protected forest land, he helped defuse the situation, working out a compromise whereby much of the forest would continue to be preserved.

Thanks for reading The Times.

Subscribe to The Times

In 2011, after Maoist rebels abducted five police officers, leading to an 18-day hostage crisis in Chhattisgarh state, in central India, he helped negotiate their release.

"He had a steely courage, and enormous compassion," said Ramachandra Guha, a pre-eminent Indian historian who knew Mr. Agnivesh for over three decades.

In recent years, as Hindu nationalism continued to rise in India, Mr. Agnivesh was one of its biggest critics, saying the core values on which the republic was founded were under strain. He wrote last year, "The democratic space where these values are meant to prevail is communalized, polarized and poisoned with hate."

John Dayal, a fellow human-rights activist, said of Mr. Agnivesh: "His main challenge was the fundamentalist Hindu."

"The politicalizing of Hinduism and the hijacking of sacred symbolisms for political gains — he abhorred it all," Mr. Dayal said.

Mr. Guha said he had admired Mr. Agnivesh's "willingness to put his life on the line in defense of the inclusive and plural faith he himself practiced."

Mr. Agnivesh was beaten many times; in one incident a mob of Hindu nationalists stripped, kicked and punched him, accusing him of inciting tribal groups to fight the government. He was convinced, he said later, that they had intended to kill him.

Swami Agnivesh was born Vepa Shyam Rao on Sep. 21, 1939, into an orthodox Hindu Brahmin family in the Srikakulam district of the southern state of Andhra Pradesh.

His father, Vepa Laxmi Narsinham, a farmer, died when Mr. Agnivesh was 4 years old. His mother, Sita Devi, a homemaker, died a year later. After he lost his parents, he was brought up by his maternal grandfather. He left no immediate survivors.

Mr. Agnivesh studied law and commerce at the University of Calcutta and, after graduating, became a professor of management studies at St. Xavier's College in the Indian state of West Bengal.

He briefly practiced law, but soon left to work in the northern states of Haryana and Punjab, both of them notorious for bonded labor. For his work against child labor there he was awarded the Right Livelihood Award for humanitarian work in 2004, given by a Swedish-based foundation.

Mr. Agnivesh spent 14 months in jail after Prime Minister Indira Gandhi declared a national emergency in 1975, jailing political opponents and activists.

He fought against Mrs. Gandhi's Indian National Congress party, was elected to the state Legislative Assembly in Haryana and was named a cabinet minister in Haryana. But he served just four months, pushed out after he protested against his own government, demanding an inquiry into the killing of 10 workers in an industrial township in a clash with police.

That episode led him to devote his life to fighting bonded labor.

- By Sameer Yasir

ओ३म्

आर्य नेता स्वामी अग्निवेश जी महाराज

– पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताकार

परमपिता जगदीश ने, रचा अजब संसार।
पालन कर्ता है वही, कर्ता है संहार।
कर्ता है संहार, निराली प्रभु की माया।
गये संतजन हार, प्रभु का पार न पाया।
कर्मों का फल यथायोग्य सबको वह देता।
न्यायकारी वह कभी किसी से कुछ न लेता

स्वामी अग्निवेश जी, नेता वीर महान।
सूझबूझ के थे धनी, वक्ता थे गुणवान।
वक्ता थे गुणवान, बोलते थे बढ़चढ़कर।
मिलनसार स्वभाव, चाहते थे नर–नारी।
राजनीति के कुशल खिलाड़ी, थे नर बंका।
सकल विश्व में बजा दिया था, जय का डंका।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा, सार्वदेशिक प्रधान।
सत्रह भाषा जानते, थे अद्भुत विद्वान्।
थे अद्भुत विद्वान्, छोड़ संसार गये वे।
नाव धर्म की छोड़, बीच मझधार गये वे।
शिक्षाविद् विख्यात, जानते सब नर–नारी।
साहस के थे पुंज, जानती दुनिया सारी।

वेद, शास्त्र दर्शा रहे, कर्म जगत प्रधान।
शुभ कर्मों से विश्व में, मानव पाते मान।
मानव पाते मान, धन्य है उनका जीवन।
देश, धर्म की भेंट चढ़ाते, जो तन–मन–धन।
युग–युग तक संसार, संत को याद करेगा।
हर मानव कर याद, उन्हें दिलशाद करेगा।

आर्य कुमारों! सब करो, देश धर्म के काम।
धूम मचा दो विश्व में, कर दो ऊँचा नाम।
कर दो ऊँचा नाम, वेद प्रचार करो तुम।
बनकर अग्निवेश, जगत की पीर हरो तुम।
जगत गुरु दयानन्द, सन्त का कर्ज चुकाओ।
'नन्दलाल' अब काम भलाई के कर जाओ।

– आर्य सदन बहीन, जनपद–पलवल, हरियाणा

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य केन्द्रीय सभा यमुनानगर के तत्वावधान में वैदिक ज्ञान आश्रम द्वारा आयोजित

सत्य सनातन वैदिक धर्म समारोह का भव्य आयोजन

स्थान : अमन पैलेस, रेलवे वर्कशॉप रोड, यमुनानगर, हरियाणा

मुख्यअतिथि स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य केन्द्रीय सभा यमुनानगर के तत्वावधान में वैदिक ज्ञान आश्रम द्वारा आयोजित सत्य सनातन वैदिक धर्म समारोह का भव्य आयोजन 10 व 11 अक्टूबर, 2020 को अमन पैलेस, रेलवे वर्कशॉप रोड, यमुनानगर, हरियाणा में भव्यता के साथ आयोजित किया जा रहा है। इस समारोह में मुख्यअतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी पधार रहे हैं। श्री भूपेन्द्र जी आर्य श्री सुभाष जी आर्य, श्रीमती पुष्पा जी चुघ, श्रीमती संगीता जी आर्य दिल्ली, गीता जी आर्या राजपुरा, अन्तर्राष्ट्रीय कवियित्री श्रीमती कांता जी वर्मा नीलोखेड़ी भजनोपदेशक के रूप में पधार रहे हैं। इनके अतिरिक्त श्री घनश्याम दास जी विधायक यमुनानगर, श्री मदन जी चौहान मेयर यमुनानगर, श्री राजेश जी सपरा जिला सभा प्रधान यमुनानगर, श्री विजय जी सरीन लुधियाना, श्री विजय जी आर्य राजपुरा, श्री सी.पी. सीकरी अम्बाला, श्री महावीर जी आर्य सहारनपुर, चौ. लाजपत जी आर्य, श्री शांति प्रकाश जी करनाल, श्रीमती आदर्श जी गुलाटी यमुनानगर सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। प्रातः 9 से 1 बजे तक यज्ञ, भजन तथा प्रवचनों का कार्य चलेगा तथा ऋषि लंगर दोपहर 1.30 बजे से होगा।

नोट :– कोरोना महामारी के दृष्टिगत सरकार द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का पालन अवश्य करें।

– निवेदक, स्वामी सच्चिदानन्द,
अध्यक्ष, मो.:–9416395561

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 • दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।